VOLUME- 1I ISSU -1I 16 March 2026
Dikshaurjit International Interdisciplinary Online Research Journal, Latur (DIIRJL)
Add.:Khadgaon Rd,Sambhaji Nagar,Near Smt.SushiladeviDeshmukh Senior College, LaturLatur, Maharashtra 413512, India.
Phone:9890408998, 8329647660Email ID: diirjournal@gmail.comWebsite:https://www.diirjournal.com

प्रा.गणेश प्रभाकर शिंदे
कुमारस्वामी वरिष्ठ महाविद्यालय, औसा

घाशीराम कोतवाल का प्रतिशोध : एक साहित्यिक विश्लेषण

१. सारांश

भारतीय नाट्य साहित्य में सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर आधारित अनेक महत्वपूर्ण रचनाएँ मिलती हैं। प्रसिद्ध मराठी नाटककार Vijay Tendulkar द्वारा रचित नाटक Ghashiram Kotwal सत्ता, अन्याय और प्रतिशोध की भावना को दर्शाता है। इस नाटक में घाशीराम नामक व्यक्ति के साथ हुए अपमान और उसके बाद सत्ता प्राप्त कर प्रतिशोध लेने की कहानी प्रस्तुत की गई है। प्रस्तुत शोध-पत्र में घाशीराम के चरित्र, उसके प्रतिशोध और नाटक के सामाजिक संदेश का अध्ययन किया गया है।

२. प्रस्तावना

भारतीय नाट्य साहित्य समाज की वास्तविकताओं को उजागर करने का एक प्रभावी माध्यम रहा है। मराठी साहित्य में कई ऐसे नाटक लिखे गए हैं जो समाज और राजनीति की जटिलताओं को दर्शाते हैं।

ऐसा ही एक महत्वपूर्ण नाटक है Ghashiram Kotwal, जिसमें सत्ता, भ्रष्टाचार और प्रतिशोध की भावना को दर्शाया गया है। इस नाटक में Nana Phadnavis के शासनकाल की पृष्ठभूमि दिखाई गई है और घाशीराम के चरित्र के माध्यम से समाज की कई सच्चाइयों को उजागर किया गया है।

३. शोध के उद्देश्य

इस शोध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:
घाशीराम कोतवाल के चरित्र का अध्ययन करना।
नाटक में प्रतिशोध की भावना का विश्लेषण करना।
नाटक के सामाजिक और राजनीतिक संदेश को समझना।

४. नाटक की पृष्ठभूमि

यह नाटक १८वीं शताब्दी के पुणे शहर की पृष्ठभूमि पर आधारित है। उस समय पुणे में पेशवा शासन था और प्रशासनिक व्यवस्था में कई प्रकार की सामाजिक और राजनीतिक समस्याएँ थीं।
नाटक में दिखाया गया है कि किस प्रकार एक साधारण व्यक्ति अपमान और अन्याय का शिकार होकर प्रतिशोध की भावना से प्रेरित हो जाता है।

५. घाशीराम का चरित्र

घाशीराम नाटक का मुख्य पात्र है। प्रारंभ में वह एक साधारण व्यक्ति होता है जिसे समाज द्वारा अपमानित किया जाता है। इस अपमान के कारण उसके मन में प्रतिशोध की भावना उत्पन्न होती है। जब उसे सत्ता मिलती है और वह कोतवाल बनता है, तब वह अपने अधिकार का उपयोग कठोर और क्रूर तरीके से करता है।

६. प्रतिशोध की भावना

नाटक में प्रतिशोध की भावना एक महत्वपूर्ण विषय है। घाशीराम अपने साथ हुए अपमान को कभी नहीं भूलता और अवसर मिलने पर वह समाज से बदला लेने की कोशिश करता है।

यह प्रतिशोध अंततः उसे और समाज दोनों को नुकसान पहुँचाता है। नाटककार यह दिखाना चाहते हैं कि प्रतिशोध की भावना समाज में हिंसा और अन्याय को बढ़ा सकती है।

७. नाटक का सामाजिक संदेश

इस नाटक के माध्यम से लेखक ने समाज और सत्ता की कई समस्याओं को उजागर किया है। नाटक का मुख्य संदेश यह है कि:

सत्ता का दुरुपयोग समाज के लिए हानिकारक होता है। अन्याय और अपमान से प्रतिशोध की भावना जन्म लेती है। नैतिक मूल्यों के बिना सत्ता समाज को नुकसान पहुँचा सकती है।

८. निष्कर्ष

क्रण्ड्डह्मण्त्द्धड्ढ ख़्द्धद्ब्यध्ड्ढ एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक नाटक है। इस नाटक में घाशीराम के चरित्र के माध्यम से प्रतिशोध, सत्ता और अन्याय की गहरी व्याख्या की गई है। यह नाटक समाज को यह संदेश देता है कि सत्ता का उपयोग न्याय और नैतिकता के साथ करना चाहिए।

९. संदर्भ

मराठी नाट्य साहित्य- संदर्भ ग्रंथ

Vijay Tendulkar के नाटक संग्रह

भारतीय नाट्य साहित्य पर आधारित शोध लेख

साहित्यिक जर्नल और ऑनलाइन स्रोत

www.diirjournal.com
diirjournal@gmail.com
Dikshaurjit International Interdisciplinary Research Journal, Maharashtra Latur